स्थानाभाव के बावजूद ईएसआईसी मेडिकल कॉलेजों के साथ नर्सिंग व टेक्निशियन कॉलेज खोलने की योजना

फ़रीदाबाद (म.मो.) दिनांक चार दिसम्बर को ईएसआई कॉर्पोरेशन की189 वीं बैठक केन्द्रीय श्रममंत्री भूपेन्द्र यादव की अध्यक्षता में समपन्न हुई थी। इसमें अन्य अनेक प्रस्तावों के साथ-साथ प्रत्येक मेडिकल कॉलेज में नर्सिंग व टेक्निशियन कॉलेज खोलने का प्रस्ताव भी पारित किया गया था। उसी के संदर्भ में इस सप्ताह स्थानीय मेडिकल कॉलेज में उक्त दोनों कॉलेज खोलने की स्वीकृति प्रदान कर दी गई है।

कहने की जरूरत नहीं कि किसी भी अस्पताल में नर्सिंग व टेक्निशियन स्टाफ़ की भूमिका डॉक्टरों से कम नहीं समझी जाती। इसलिये इनकी आपूर्ति के लिये ऐसे कॉलेजों का खोलना अति आवश्यक है। परन्तु सवाल यह उठता है कि स्थानीय मेडिकल कॉलेज में ये दोनों उक्त कॉलेज खोलने की जगह कहां है ? क्या ये मौजूदा मेडिकल कॉलेज की छत पर अथवा बेसमेंट के नीचे खोले जायेंगे ? विदित है कि यहां पर पहले से ही जगह की भारी कमी महसूस की जा रही है। सुपरस्पेशलिटी के लिये पहले ही 500 बेड की अतिरिक्त बिल्डिंग बनाने का निर्णय एक वर्ष पहले ही लिया जा चुका है। इसके लिये परिसर में स्थित पुरानी बिल्डिंग को तोड़कर, नई बनाने का फैसला हो चुका है। हलांकि धरातल पर आज तक धेले भर का भी काम नहीं हो पाया है।

इसी तरह एमबीबीएस कोर्स में छात्रों की संख्या 100 से बढ़ाकर 150 कर दिये जाने से छात्रावास की कमी होने के चलते छात्रों को कॉलेज से 10 किलोमीटर दूर जाकर रहना पड़ता है। उनके लिये आज तक हॉस्टल निर्माण की कोई प्रक्रिया शुरू नहीं की गई है। 10 किलोमीटर दूर किराये पर लिये गये हॉस्टल पर आने-जाने के खर्च व किराये पर अब तक करोड़ों रूपये खर्च हो चुके हैं, छात्रों की परेशानी अलग से। इसी तरह पोस्ट ग्रेजुएशन डॉक्टरी छात्रों की संख्या भी 90 से अधिक हो चुकी है तथा इतने ही अगले साल और आ जायेंगे। इनके लिये भी हॉस्टल की कोई व्यवस्था नहीं है। विदित है कि इन छात्रों को रात-दिन अस्पताल में ही रहना होता है। इसलिये इनके लिये हॉस्टल अति आवश्यक होता है। लेकिन कॉर्पोरेशन को इसकी रत्ती भर चिन्ता नहीं। अधिकारियों को यह समझने की कोई जरूरत महसूस नहीं होती कि हॉस्टल की कमी के चलते पढ़ाई के अलावा चिकित्सा सेवा में कितनी दिक्कत आती है।

खट्टर सरकार कोरोना के नाम पर दो बार इस अस्पताल को अपने कब्जे में ले चुकी है और नीयत, जरूरत पड़ने पर फ़िर से लेने की रहती है। लेकिन इस अस्पताल को आवश्यक अतिरिक्त जमीन देने की उन्हें कोई जरूरत महसूस नहीं होती। विदित है कि मेडिकल कॉलेज व बीके अस्पताल के बीच तीन एकड़ ज़मीन खाली पड़ी हुई है जिस पर विधायक सीमा त्रिखा झोपड़पट्टी बनाना चाहती हैं। इसी तरह साथ लगती चार एकड़ ज़मीन भी इस अस्पताल को दी जा सकती है जिससे इसका आवश्यक विस्तार सम्पन्न हो सके।

कॉर्पोरेशन की उक्त बैठक में डेंटल कॉलेजों में एमडीएस तक की भी पढ़ाई कराने का फैसला किया गया है, जो अभी तक केवल बीडीएस तक की ही पढ़ाई होती आ रही है। इसके अतिरिक्त सभी कॉलेजों में पीएचडी कार्यक्रम भी चलाने का निर्णय लिया गया है। ये निर्णय, नि:संदेह सराहनीय हैं। सवाल तो केवल इतना है कि इन्हें अमलीजामा पहनाने में कितने वर्ष लगेंगे ? इसी बैठक में यह भी निर्णय किया गया कि ईएसआई कवर्ड (बीमित) मज़दूरों के बच्चों के लिये इन सभी कोर्सों में सीटें आरक्षित की जायें

मज़दूरों का पैसा शेयर बाजार में लगेगा

विदित है कि चिकित्सा सेवायें प्रदान करने के नाम पर कॉर्पोरेशन द्वारा मज़दूरों से वसूले गये पैसे को उन पर खर्च न करने के चलते इसके पास डेढ़ लाख करोड़ से अधिक का फंड एकत्रित हो चुका है। इस फंड से चिकित्सा सेवाओं का विस्तार करने की अपेक्षा इसे शेयर बाजार में लगाने का निर्णय लिया गया है। शुरू में कुल धन का पांच प्रतिशत लगा कर देखा जायेगा। उसके परिणाम देखने के बाद इसे 15 प्रतिशत तक बढाया जा सकेगा।

मोदी सरकार का यह फैसला बहुत ही खतरनाक है। मज़दूरों से जिस काम के लिये पैसा वसूला गया, उसे उस काम पर न लगा कर अडाणियों व अम्बानियों को दिया जाना घोर मज़दूर विरोधी कदम है। इस बात की भी कोई गारंटी नहीं होगी कि मज़दूरों का यह पैसा शेयर मार्केट में सुरक्षित रह पायेगा, न जाने कब कौन सी कम्पनी दीवालिया घोषित होकर इस पैसे को डकार जाये। कम्पनियों द्वारा बैंकों के पैसे को डकारे जाने का उदाहरण सर्वविदित है।

ईएसआई हेल्थकेयर हरियाणा का बेहूदा फर्मान

पहले सेक्टर आठ के धक्के खाओ, तब मेडिकल कॉलेज में इलाज पाओ

फ़रीदाबाद (म.मो.) ईएसआई कॉर्पोरेशन को अपने खून-पसीने से सींचने वाले मज़दूरों का सरकार कोई भला कर पाये या न परन्तु उनकी ऐसी-तैसी करने का कोई मौका, सरकारी अफसर छोड़ने वाले हैं नहीं।

इस शहर में एक अस्पताल सेक्टर आठ में व दूसरा एनएच तीन में काफ़ी अरसे से चले आ रहे हैं। शहर भर में कुल 15 डिस्पेंसरियों में से, मज़दूरों की सुविधा अनुसार कुछ को सेक्टर आठ से व कुछ को एनएच तीन के अस्पताल से जोड़ा गया था। राष्ट्रीय राजमार्ग से एनआईटी की ओर वाले क्षेत्र की डिस्पेंसरियों को एनएच तीन से व शेष को सेक्टर आठ वाले अस्पताल से जोड़ कर रखा गया था। इसी फार्मूले के अनुसार मेडिकल कॉलेज बनने के बाद भी ये इसी अस्पताल से जुड़ी रहीं।

विदित है कि सामान्यतया मरीज पहले डिस्पेंसरी में जायेगा, जरूरत समझी जाने पर उसे अस्पताल रेफ़र किया जायेगा और अधिक जरूरत समझी जाने पर उसे किसी बड़े अस्पताल को रेफर किया जायेगा। इस व्यवस्था से सेक्टर आठ के कुछ डॉक्टरों को अपनी चौधर में कुछ कमी महसूस होने लगी तो उन्होंने पंचकूला स्थित ईएसआई हेल्थ-केयर को पत्र लिख कर मांग की कि एनएच तीन अस्पताल से जुड़ी तमाम डिस्पेंसरियां सीधे तौर पर मरीजों को मेडिकल कॉलेज अस्पताल को रेफर न करें। वे पहले सेक्टर आठ को रेफर करें, फ़िर यदि जरूरत समझी जायेगी तो उन्हें मेडिकल कॉलेज रेफ़र किया जायेगा।

सैक्टर-8 का बीमार ईएसआई अस्पताल

सर्वविदित है कि रेफ़र करने वाली डिस्पेंसरियों में तो सरकार ने छोड़ा ही कुछ नहीं और सेक्टर आठ के अस्पताल में भी कुछ करने-धरने को है नहीं। नये फरमान के मुताबिक, जिन डिस्पेंसरियों से मरीज़ सीधे रेफ़र होकर मेडिकल कॉलेज जाते थे वे अब पहले सेक्टर आठ धक्के खाने जायेंगे और वहां के चक्कर लगाने के बाद रेफर होकर मेडिकल कॉलेज आयेंगे। जन विरोधी सोच रखने वाले इन अफसरों ने यह सोचने की जरा भी जहमत नहीं उठाई कि इससे मज़दूरों को कितनी कठिनाई आने-जाने में होगी, कितना किराया भाड़ा रिक्शाओं में लगेगा और कितनी दिहाड़ियां टूटेंगी ? अभी तक यह फ़रमान लागू नहीं हुआ है बल्कि अभी तक दफ्तर की फाइल में ही रखा है। जिस दिन यह फरमान मज़दूरों में प्रसारित होगा उस दिन इसकी भारी प्रतिक्रिया देखने को मिलेगी। जो मज़दूर जैसे-तैसे शान्तिपूर्ण अपनी गुजर-बसर करते आ रहे हैं, वह हरियाणा सरकार के अफसरो को रास नहीं आ रहा। वे मज़दूरों को भड़का कर जरूर कोई न कोई हंगामा बोने की राह पर हैं।

बल्लभगढ़ स्थित बालाजी कॉलेज में फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन

बल्लभगढ़ स्थित बालाजी कॉलेज में आज फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कॉलेज के निदेशक जगदीश चौधरी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने संबोधित करते हुए कहा कि नयापन, नया जीवन, नई शुरुआत, नई उड़ान वह है जिसमें सब कुछ एक नई दुनिया, नए विचार तथा ज्ञान के रास्ते मिलते हैं। इस समय हमारी ऊर्जा की सकारात्मकता और उत्सुकता हमारे ज्ञान और मानसिक परिपक्वता को श्रेष्ठ कर एक सफल जीवन का आधार रखती है। इसलिए सभी नए विद्यार्थियों को चाहिए कि वह स्वअनुशासन , जिम्मेदारी के प्रति गंभीरता , सभी कार्यक्रमों में सहभागिता और कार्यों को नियत समय में पूरा करना उनकी सफलता का सूत्र बनेगा।

इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राध्यापक ममता मलिक ने कहा कि मनुष्य का जीवन लंबा नहीं बड़ा होना चाहिए। जैसे स्वामी विवेकानंद का उदाहरण हमारे सामने हैं। विवेकानंद जी ने हालांकि कम समय का सांसारिक जीवन जिया परंतु इतना बड़ा काम उन्होंने मानवता के लिए किया जिससे वह सदैव हमारे मार्गदर्शक बने रहेंगे।

कॉलेज के प्राध्यापक चेतन प्रकाश, दिनेश कुमारी, उषा डागर, सुषमा, निधि, रविंद्र एवं संदीप नागर ने भी संबोधित कर मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दी। गुजराती गरबा नृत्य, देश भक्ति गीत, राजस्थानी कालबेलिया नृत्य एवं रागनियों ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया । कार्यक्रम के अंत में मिस्टर फ्रेशर के रूप में सहदेव एवं मिस फ्रेशर के रूप में गरिमा को पुरस्कृत किया गया। प्राध्यापक मंजू डागर ने धन्यवाद ज्ञापन किया एवं शांति पाठ के साथ फ्रेशर पार्टी की समाप्ति हुई।